| ई - समिधा |

अन्य पुस्तको की pdf के लिए
टेलीग्राम पर ई-समिधा चैनल से जुड़े।

🙏

Scanned by CamScanner

संकल्प

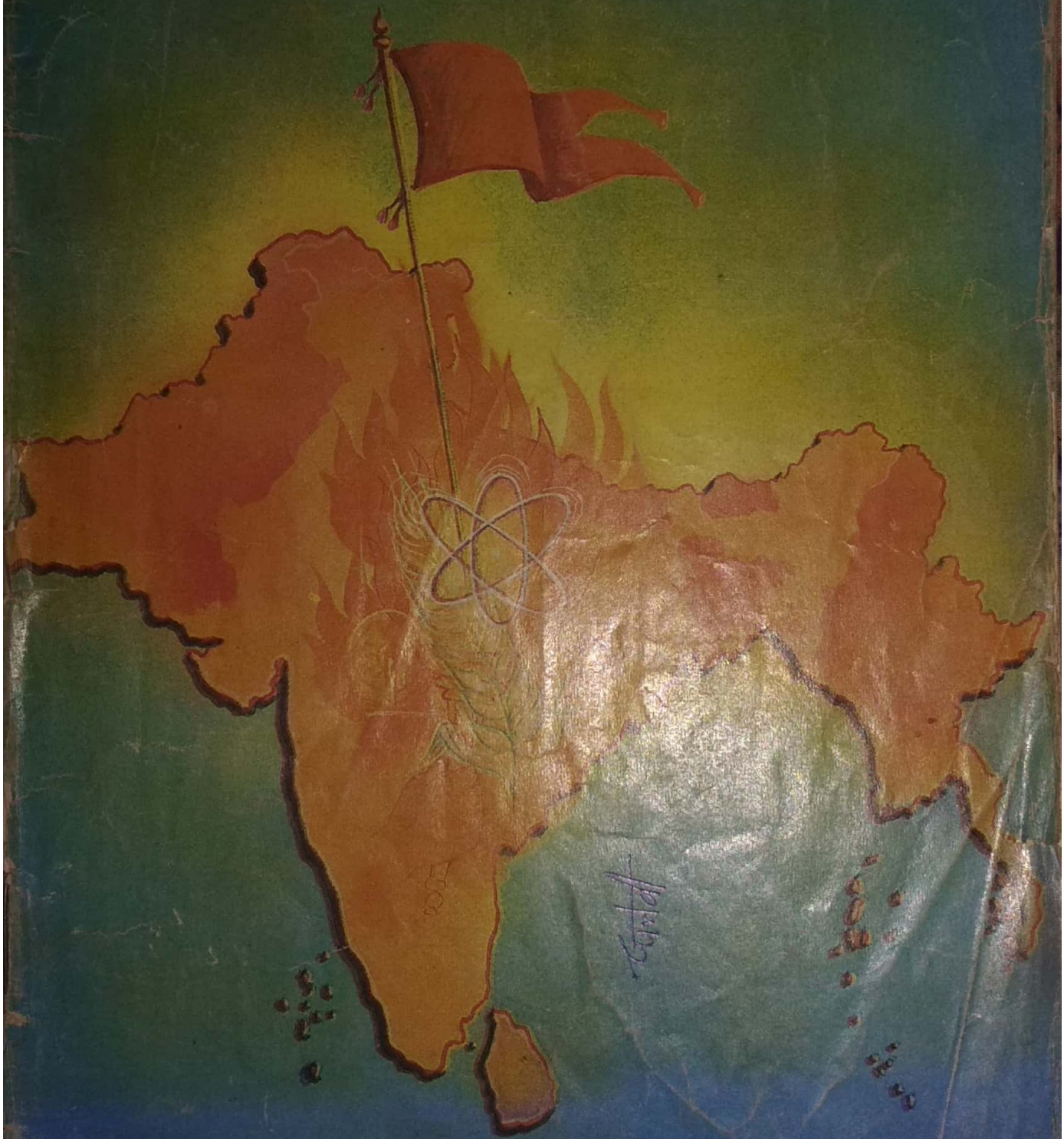

अखण्ड एंव स्वावलम्बी भारत

Scanned by CamScanner

अथ

श्री अरविन्द ने 1920 में एक पत्र लिखा था, "एक अकेले वीर का संकल्प हजारों कायरों के हृदयों में साहस फूँक सकता है।" यह वाक्य बार-बार पढ़ने और सुनने की इच्छा होती है क्योंकि आज के दुर्दशाग्रस्त भारत में कायरों का बोल-बाला दिखता है और आँखें वीरों की प्रतीक्षा में थकने लगी हैं। वे वीर जिनके हृदय वज्र संकल्पों से भरे होंगे और जिनके पाँव काँटों पर चलते रहने के कारण कठोर बन चुके होंगे। जिनकी वाणी, वेष और व्यवहार में होगा भारत का प्रतिबिम्ब। जो चारों ओर भारतीयता के विस्तार और व्याप हेतु कठोर-से-कठोर कदम उठाने में भी संकोच नहीं करेंगे। जो सदैव यह याद रखेंगे कि 'क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो' इसी भाव से वे तब अंग्रेजी और अंग्रेजियत के वर्चस्व को तोड़ेंगे। भारत की भूमि पर कब्जा किये हुये शत्रुओं का सिर कुचलकर गंधार से कैलाश तक धर्म ध्वजा फहरायेंगे। जिनकी भुजाओं में इतना बल और हृदय में इतना साहस होगा कि वे जब पुनः हिन्दू कुश का नाम हिन्दू गौरव रखकर उस पर केसरिया न फहरा दें तब तक चैन से न बैठेंगे। पर यह तब होगा जब इस राष्ट्र के मन और शरीर दोनों के दारिद्रय के विरुद्ध युद्ध जीत लिया जायेगा। यह तब होगा जब हिन्दुओं के रक्त में धुल-सी गई गुलामी, कायरता, दब्बूपन और पाखंड का अंत होगा और यह तब होगा जब हिन्दू अपने उद्धार के लिये किसी अवतार या नायक की प्रतीक्षा में बैठे रहने की मानसिकता को त्याग देगा। यह अपना समाज पूजा करेगा रणचंडी की, सुदर्शनधारी कृष्ण और मर्यादा पुरुषोत्तम राम की लेकिन हृदय में इतनी दुर्बलता भरी है कि शत्रु पर पलटकर वार नहीं करते।

Scanned by CamScanner

जैसे कश्मीर में एक ही जाति, एक ही पुरखों, एक ही गोत्र के होते हुए मुस्लिम नामधारी आतंक फैलाने वाले बन गये और हिन्दू नामधारी फटे तम्बुओं में रहने के लिए पलायन करने वाले शरणार्थी। कितनों ने पलटकर, जान जोखिम में डालकर एक भी मुस्लिम आतंकवादी की गर्दन मरोड़ने का साहस दिखाया? कितनों ने आतंकवादियों के सीने को छलनी किया? एक ने भी नहीं किया। देश के स्वातंत्र्य प्राप्ति के समय ही सत्ता में बैठे सत्ताधारियों ने हिन्दू समाज की विजीगीषु वृत्ति को मातृभूमि का विभाजन करके तिलांजलि दे दी थी। केवल सत्ता की आधी-अधूरी रोटी को पाकर अपनी प्यारी मातृभूमि के अंग शत्रुओं के हाथों से नुचवा दिये। आज भी इसी मानसिकता को लेकर राजनीति में महाभारत के शकुनि, दुशासन, दुर्योधन दंभ भरकर खड़े हैं। इनको 'पोकरन का अणु विस्फोट' जो इस राष्ट्र की ऊर्जा के प्रगटीकरण का प्रतीक है—अच्छा नहीं लगा क्योंकि यह घटना राष्ट्रवादियों के विजय की प्रतीक न बन जाये। लेकिन हमारे देश के अटल प्रधानमंत्री ने प्रगट किया है भारत की करोड़ों युवकों की ऊर्जा को। पुनः रुद्र का अट्टहास! चारों ओर मात्र शिवत्वमय सत्य का सौंदर्य भासमान हुआ।

इस चिर पुरातन राष्ट्र की आत्मा का पुनर्जागरण की बेला शीघ्र आ रही है। यह भारत पुनः वंद्य भारत माता की ध्वजा लेकर नई सदी में विश्व विजय करेगा। पुनः नये युग की संधि बेला में दूसरा स्वातंत्र्य समर लड़ा जाना शेष है। कालपुरुष ने भारत के द्वार पर दस्तक देनी प्रारम्भ कर दी है। उठेगी भारत की तरुणाई, उठेगा नव उत्साह, शौर्य, निश्चित अंतिम विजय हमारी है। प.पू. रज्जू भैया का आह्वान है कि इस महासमर में हमारी विजय ही विजय है पर धर्म युद्ध के सिपाही (स्वयंसेवक) को एक-एक कदम योजना से उठाना है। हो चुका है पाञ्चजन्य का घोष! संघ शक्ति के रूप में भगवान का प्रगटीकरण हुआ है। बन्धुओं! हमें ही करना है अखंड भारत, हमें ही करना है समर्थ भारत, होगा कैसे जन-जन का जागरण···यह पुस्तक इस भाव को लेकर समर्पित है।

—योगराज

Scanned by CamScanner

पूर्वार्द्ध

भारत विभाजन क्यों?

भारत विभाजन यह स्थापित सत्य नहीं

जिस तरह स्वाधीनता से पहले प्रत्येक राष्ट्रभक्त के लिए स्वाधीनता की भावना प्रेरणा का मुख्य स्रोत हुआ करती थी उसी तरह स्वाधीनता के बाद अखण्ड भारत का स्वप्न प्रत्येक राष्ट्रभक्त के लिये प्रेरणा का मुख्य स्रोत होना चाहिये और इस स्वप्न को साकार करने के लिए उसे सतत् क्रियाशील रहना चाहिये।

परन्तु यह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि कुछ लोगों को छोड़कर आज जनता अखण्ड भारत का विचार ही नहीं करती। इसका कारण यह है कि भारत विभाजन को स्थापित सत्य (settled fact) मान लिया गया है। लोग कहते हैं कि भारत का विभाजन एकदम गलत है, यह नहीं होना चाहिये था, परन्तु अब क्या किया जा सकता है? विभाजन तो हो गया। अब फिर से भारत को अखण्ड थोड़े ही किया जा सकता है। इसी विचार के कारण लोग विभाजन और अखण्ड भारत के बारे में सोचते ही नहीं। इसलिये सबसे पहले लोगों के मनों से इस ''स्थापित सत्य'' वाली बात को निकालना होगा। आइये, इतिहास की कुछ ''स्थापित सत्य'' दिखनेवाली बातों के बारे में विचार किया जाए।

सैकड़ों वर्ष पहले यहूदियों को उनके देश इजराइल से विस्थापित होना पड़ा। एक दृष्टि से देखा जाए तो उनका यह विस्थापन ''स्थापित सत्य'' था। परन्तु यहूदियों की प्रचण्ड इच्छाशक्ति ने इस ''स्थापित सत्य'' को बदल दिया और आज वे अपने इजराइल में रहते हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी का विभाजन हो गया। इतनी

Scanned by CamScanner

सख्ती थी कि अब यह विभाजन सदैव के लिये है ऐसा लगने लगा था। परन्तु आज जर्मनी फिर से अपने अखण्ड रूप में है।

कुछ वर्ष पहले तक सोवियत संघ विश्व की दो महाशक्तियों में से एक था। आज उसके अनेक टुकड़े हो चुके हैं और इस तरह सोवियत संघ "भूतपूर्व" का दर्जा प्राप्त कर चुका है।

1970 से पहले बांग्लादेश के बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था। 1971 में वह अस्तित्व में आ गया।

भारत विभाजन के कुछ वर्ष पहले तक विभाजन हो सकता है, यह बात असम्भव लगती थी। तभी तो पं. जवाहरलाल नेहरू ने विभाजन की माँग को "विलक्षण मूर्खता" (fantastic nonsense) कहा और यह कहकर इस माँग की खिल्ली उड़ाई कि "जो विभाजन की बात करते हैं वे मूर्खों के स्वर्ग में रहते हैं" (those who talk of partition live in paradise of fools). परन्तु 1947 में भारत का विभाजन हो गया।

इतिहास ऐसी असम्भव लगनेवाली बातों के सम्भव होने से भरा पड़ा है। फिर भारत विभाजन को "स्थापित सत्य" क्यों माना जाए? इच्छाशक्ति और प्रयत्नों के आधार पर इसे भी बदला जा सकता है। यही विचार हर भारतवासी का होना चाहिये।

Scanned by CamScanner

स्वाधीनता संग्राम की निर्णायक घड़ी

सिकन्दर पहला विदेशी आक्रामक था। उसे मुँह की खानी पड़ी और निराश होकर भारत से पलायन करना पड़ा। शक, हूण, कुशान के रूप में अनेक विदेशी आक्रमणकारी आये पर वीर प्रसूता भारत माता की कोख से उत्पन्न हर्ष वर्धन, यशोधर्मा, विक्रमादित्य और शालिवाहन जैसे साहसी योद्धाओं ने इनको धूल चटा दी। 7वीं शताब्दी में मुस्लिम जातियों के आक्रमण प्रारम्भ हुये फिर उनका तांता लग गया। इन आक्रमणकारियों ने भयंकर मारकाट, विनाश किया। हिन्दू शूरवीरों ने धर्म, संस्कृति की लाज रखने के लिए इन दानवों से अनवरत संघर्ष किया। टूटे नहीं, झुके नहीं, मातृभूमि के लिये जीवन अर्पित करते रहे। संसार के इतिहास में इतना 800 वर्ष का लोमहर्षक स्वाधीनता संग्राम का उदाहरण कहीं भी नहीं मिलता। प्रताप, शिवा, वीर छत्रसाल, गुरु गोविन्द सिंह, महाराणा रणजीत सिंह इत्यादि राष्ट्रनायकों ने वीरता के जौहर दिखाये और इस्लाम की अजेय तलवार को धूल चटाकर खण्ड-खण्ड कर दिया।

अंग्रेजों से संघर्ष

जब भारत अपनी स्वतन्त्रता के लिये सफलतापूर्वक संघर्ष कर रहा था, उसी समय एक व्यापारी के रूप में तीसरी शक्ति भारत में प्रवेश कर रही थी। अंग्रेजों ने धीरे-धीरे सभी राज्यों को हड़प लिया था या उन पर प्रभावी नियन्त्रण स्थापित कर लिया था।

अभी तक भारतीय स्वातन्त्र्य प्रयासों का लक्ष्य था—इस्लामी सत्ता

Scanned by CamScanner

धक्का देना शेष था। अत: बदली हुई परिस्थितियों में लक्ष्य को भी बदलना पड़ा। अब लक्ष्य हो गया—अंग्रेजी सत्ता का उच्छेद।

1857 का स्वातंत्र्य समर

इस स्वातंत्र्य समर में हिन्दू और मुसलमान दोनों ने ही स्वधर्म, स्वराज्य की रक्षा के लिये व्यापक योजना बनाई थी। दुर्भाग्य से योजना के अभाव में यह समर विफल हो गया। अंग्रेजों का पुन: भारत पर अधिकार हो गया।

हिन्दू राष्ट्रीयता का बोध

19वीं शताब्दी में हिन्दुओं को अपने गौरवशाली अतीत की महानता का बोध शुरू हुआ। विस्मृत राष्ट्रभाव का पुनर्जागरण हुआ। स्वामी रामकृष्ण, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द, स्वामी रामतीर्थ, योगीराज अरविन्द जैसे आध्यात्मिक महान आत्माओं ने सांस्कृतिक परम्परा की अमरता का मंत्र फूँका। बंकिम के 'वन्देमातरम्' के गीत ने बलिदानियों की अनगिनत शृंखला खड़ी कर दी। देश को स्वातंत्र्य की चौखट पर पहुँचाने के लिये तिलक, गोखले, गांधी ने आन्दोलन के द्वारा जन-जागरण का प्रयास किया। वासुदेव बलवन्त फड़के की क्रान्तिकारी परम्पराओं ने सशस्त्र क्रान्ति का बिगुल फूँका। भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु, चन्द्रशेखर आजाद जैसे वीरों ने सशस्त्र क्रान्ति को चरम शिखर पर पहुँचाया। कुल मिलाकर स्वाधीनता संग्राम का ज्वार उच्च शिखर पर पहुँच गया था। सुभाष बोस की 'जय हिन्द की गर्जना', गांधी का 'भारत छोड़ो आन्दोलन' ने अंग्रेजी साम्राज्य की चूलें हिला दी। क्रान्ति के आन्दोलन ने विकराल रूप धारण कर लिया।

इधर द्वितीय विश्वयुद्ध में अंग्रेजों की सैन्य शक्ति क्षीण हो चुकी थी। भारतीय थल सेना, नौ सेना में भी स्वातंत्र्य की भावना तेजी से फैलने लगी थी। अंग्रेजों ने समझ लिया कि उनके दिन पूरे हो चुके हैं। उन्होंने भारत छोड़ने का निश्चय किया। उन्होंने घोषणा की कि अमुक तिथि को वे भारतीयों को सत्ता सौंप देंगे। स्वाधीनता के स्वागत के लिये

Scanned by CamScanner

ऐतिहासिक घड़ी चुनी गई। वह थी—14-15 अगस्त की मध्य रात्रि बेला।

आजादी मिली पर दिव्य भारत माँ की प्रतिमा खण्डित

यह कैसा नियति का मिलन? 14 अगस्त की अर्द्धरात्रि बीत गई—स्वाधीन भारत के सूर्योदय के स्वागत में 31 तोपों की सलामी दी गई। गर्वोन्नत यूनियन जैक को उतारा और उसकी जगह तिरंगे ने स्थान लिया। इस ऐतिहासिक मोड़ से कुछ घंटे पूर्व वंदनीया जगत जननी, बंकिम की अधिष्ठात्री ("तोमाराई प्रतिमा गडि मन्दिरे। वन्देमातरम्") भारत माँ के चीरकर दो टुकड़े कर दिये। विभाजन एक ऐसी पीड़ाजनक और लज्जास्पद घटना है जिसका कहीं भी दृष्टांत नहीं मिलता। भारत माँ के असंख्य लाल एक ही क्षण में अपनी धरती से पराये हो गये। सिन्धु नदी अपनी करोड़ों सन्तानों से बिछुड़ गई। करोड़ों भाई-बहन एक दूसरे के लिये पराये हो गये। भीषण नर संहार हुआ। लाखों निर्दोष लोग मारे गये। मन्दिर, तीर्थ-स्थान, सभी पवित्र स्थल ध्वस्त कर दिये गये। एक तरफ दिल्ली दुल्हन की तरह सज रही थी दूसरी तरफ लव की राजधानी* लाहौर में अन्धेरा और चीत्कार था। असंख्य हिन्दू बन्धु लूट-पिटकर अमृतसर, अम्बाला, दिल्ली की ओर आ रहे थे। इससे अधिक 'नियति के साथ मिलन' के समय अधिक दु:खद क्या मजाक हो सकता था।

स्पष्ट है यह राष्ट्रीय आपदा एक साथ आकाश से नहीं टपक पड़ी थी। इतिहास के गर्भ में इस विभाजन का षड्यंत्र जरूर रचा गया होगा। इस विभाजन के बीज को जरूर किसी ने हवा, पानी दिया होगा। कौन था माली जिसने इस विषैले बीज को सींचा? ये कुछ प्रश्न हैं। विभाजन के दुखांत नाटक के तीन पात्र थे—अंग्रेज, मुस्लिम लीग, इंडियन नेशनल कांग्रेस।

---

* भगवान श्री राम के पुत्र लव की राजधानी लाहौर।

Scanned by CamScanner

उपर्युक्त विषय पर विचार करते समय उन घटनाओं का वर्णन करना है जिसके कारण विभाजन हुआ।

भारत विभाजन का घटनाक्रम

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद ही अंग्रेज भारत को कमजोर करने के लिये 'फूट डालो और राज करो' की नीति पर चलकर भारत विभाजन का कुचक्र रच रहे थे। सर सैयद अहमद को आगे कर 1875 में अलीगढ़ मुस्लिम विद्यालय की स्थापना और 1905 में साम्प्रदायिक आधार पर बंगाल विभाजन—यह भारत विभाजन का पूर्वाभ्यास था—जिससे तत्कालीन राष्ट्रवादी विरोध के कारण वापस लेना पड़ा। 1909 में मुसलमानों को पृथक निर्वाचन मण्डल, 1916 में लखनऊ पेक्ट में दिये गये वेटेज (weightage) उदाहरण उ.प्र. में 14 प्रतिशत मुस्लिम जनसंख्या 30 प्रतिशत सीटें। इस पेक्ट का तात्कालीन राष्ट्रवादी जिन्ना ने विरोध किया था।

Scanned by CamScanner

तुष्टीकरण के विषबीज

कांग्रेस आरम्भ से ही अंग्रेजों के बुने वैचारिक जाल में फँस गई। अंग्रेजों का कहना था कि कांग्रेस एक राष्ट्रीय संस्था कहलाने का तभी दावा कर सकती है जब इस देश के भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों को मानने वाले सभी समुदाय उसके मंच पर आ जायें। अंग्रेज सरकार तभी उसे समस्त भारतीयों का प्रतिनिधि मानेगी और उसकी माँगों पर विचार करेगी। राष्ट्र और राष्ट्रीय धारणा की यह निराली व्याख्या थी।

इसका एक प्रमुख उदाहरण विदेशी जमीन पर उपजे खिलाफत आन्दोलन का है। तुर्की के खलीफा को जो अल्लाह का प्रतिनिधि माना जाता था, अंग्रेजों ने वहीं के ही एक राष्ट्रवादी कमालपाशा के हाथों से गद्दी से उतरवा दिया। इस पर भारत में मुसलमानों ने खिलाफत आन्दोलन चलाया। गांधी जी ने खिलाफत के समूचे प्रश्न को एक वैचारिक आधार प्रदान किया और यहाँ तक कह डाला "खिलाफत के प्रश्न पर सफलता प्राप्त करने के लिए यदि आवश्यकता पड़े तो स्वराज्य के प्रश्न को स्थगित कर दूँगा।" तथापि कांग्रेस में भी ऐसे अनेक स्वर उभरे जिन्होंने सचेत किया कि खिलाफत जैसे साम्प्रदायिक उन्माद के प्रश्न पर सरकार-विरोधी आन्दोलन में कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय संस्था के कूदने के क्या फल हो सकते हैं।

खिलाफत आन्दोलन का तात्कालिक प्रभाव तो पड़ा ही। इसके अतिरिक्त बाद में उसके जो दु:खदायी परिणाम निकले उन्होंने भारतीय राजनीति के समूचे भविष्य को ही तेजी के साथ उलट-पुलट कर दिया।

इसी आन्दोलन के साम्प्रदायिक उन्माद में से ही निकले अब्दुल रशीद नाम के एक मुस्लिम युवक ने 23 दिसम्बर, 1926 को स्वामी

Scanned by CamScanner

श्रद्धानन्द की गोली मारकर हत्या कर दी।

गांधी जी का एक रूप

हिंसा में प्रवृत होने के कारण भगतसिंह आदि देशभक्तों की जीवन रक्षा चाहने वाली याचिका पर हस्ताक्षर करने से गांधी जी ने इन्कार कर दिया और हिंसा के ही कारण उन्होंने शिवाजी, राणा प्रताप तथा गुरु गोविन्द सिंह को 'पथ भ्रष्ट देशभक्त' कहा था।

गांधी जी का दूसरा रूप

स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या के कारणों पर प्रकाश डालते हुए कहा, ''अब शायद आप समझ गये होंगे कि किस कारण मैंने अब्दुल रशीद को भाई कहा है और मैं पुनः उसे भाई कहता हूँ। मैं तो उसे स्वामी जी की हत्या का दोषी भी नहीं मानता। वास्तव में दोषी तो वे हैं जिन्होंने एक-दूसरे के विरुद्ध घृणा फैलायी।''

राष्ट्रीय प्रतीकों पर समझौता

कांग्रेस के विरुद्ध लीग ने जो आरोप लगाये और जिस प्रकार कांग्रेस ने उनका उत्तर देने का प्रयत्न किया उससे देश की दो प्रतिद्वंद्वी शक्तियों के मनोभावों का पता चलता है। जहाँ एक ने अलगाववादी राष्ट्र विरोधी और आक्रामक रूप अपनाया वहाँ दूसरा इस मृगतृष्णा में फँस गया कि धमकी को शान्त करने के लिए उन्हें तुष्ट किया जाये।

(क) वन्देमातरम्

सर्वाधिक उल्लेखनीय उदाहरण 'वन्देमातरम्' का है। यह प्रसिद्ध गीत प्रथम बार बंकिम चन्द्र चटर्जी के ऐतिहासिक उपन्यास 'आनन्द मठ' में प्रकाशित हुआ था। यह मातृ भूमि के प्रेम से ओत-प्रोत एक गान था।

जब 1905 में बंगाल का विभाजन हुआ तो वन्देमातरम् समूचे राष्ट्र का युद्ध गीत बन गया। तत्पश्चात् कांग्रेस ने भी उसे राष्ट्रगान के

Scanned by CamScanner

रूप में स्वीकार किया और प्रथम बार महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उसे कांग्रेस अधिवेशन में गाया। ब्रिटिश सम्राज्यवादी सॉड तो वन्देमातरम् के उच्चारण मात्र से भड़क उठता था।

सैकड़ों क्रान्तिकारी वीरों ने मातृभूमि के चरणों में इसकी अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए फाँसी के फँदे को गले से लगाया। गांधी जी प्राय: इस गीत की महिमा का बखान करते।

1923 में कांग्रेस के काकीनाडा अधिवेशन में इस राष्ट्रीय गीत पर प्रथम प्रहार हुआ। उन दिनों प्रसद्धि गायक और देशभक्त महाराष्ट्र के विष्णु दिगम्बर पलुस्कर कांग्रेस के उद्घाटन अधिवेशन को वन्देमातरम् के अपने हृदयस्पर्शी और रसीले गायन से आप्लावित करते थे। किन्तु इस बार जब वह मंच पर पहुँचे तो अध्यक्ष मौलाना मोहम्मद अली ने उन्हें रोक दिया। मौलाना ने कहा कि इस्लाम में संगीत वर्जित है, इसलिए इसकी अनुमति नहीं देंगे। समूची सभा स्तब्ध रह गई। मंच पर बैठे सभी प्रतिष्ठित जन तथा दिग्गज जैसे गूँगे और किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये। उनसे अध्यक्ष को कुछ भी उत्तर देते न बना, परन्तु पलुस्कर अपने स्थान पर खड़े रहे। अपनी सात्विक ओजपूर्ण वाणी में उन्होंने मौलाना को लताड़ा; "भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस किसी एक सम्प्रदाय-विशेष की बपौती नहीं है, न ही यह स्थान कोई मस्जिद है जहाँ पर गाने पर प्रतिबन्ध लगाया जा सकता हो। अत: आपको इस बात का कोई अधिकार नहीं है कि आप मुझे 'वन्देमातरम्' गाने से रोकें। फिर यदि इस स्थान पर गाना आपके सम्प्रदाय के विरुद्ध है तो अपनी अध्यक्षीय शोभा यात्रा में गायन आपने कैसे सहन किया?"

इस चुनौती भरे प्रश्न का मौलाना के पास कोई उत्तर नहीं था। वह मंच छोड़कर चले गये और पलुस्कर गाते रहे।

कांग्रेस को नयी चिन्ता सताने लगी। मुसलमानों को अपने पक्ष में करने के मार्ग में 'वन्देमातरम्' काँटा सिद्ध हो रहा था। जब अंग्रेजों ले लाठियाँ और गोलियाँ चलायीं और वन्देमातरम् पर प्रतिबन्ध लगा दिया, उस समय कांग्रेस तनिक भी विचलित नहीं हुई थी। इस अग्नि परीक्षा के बाद उसने उसे राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार कर लिया। परन्तु

Scanned by CamScanner

मुस्लिम लीग के विरोध के आगे उसने घुटने टेक दिये।

परन्तु कांग्रेस ने मान लिया और गीत के कतिपय अंशों के बारे में मुस्लिम मित्रों द्वारा उठायी गयी आपत्ति को वैध ठहराया। कांग्रेस ने अपने आयोजकों को यह भी छूट दे दी कि "वन्देमातरम्" के अतिरिक्त अथवा उसके स्थान पर कोई अन्य आपत्ति रहित गीत गा सकते हैं।"

(ख) राष्ट्रीय ध्वज

अब बारी आती है राष्ट्रीय ध्वज की। राष्ट्रीय ध्वज निश्चय ही राष्ट्र के आदर्शों और आकांक्षाओं का, उसके इतिहास और परम्परा का, उसके हुतात्माओं के अनन्त बलिदानों और कष्टों को, उसके वीरों और सन्तों के शौर्य और तप का सर्वाधिक वन्दनीय और जगमगाता प्रतीक है। इस सम्बन्ध में कांग्रेज की क्या विचारधारा थी? वर्तमान तिरंगे को वह स्तर कैसे प्राप्त हुआ?

भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित कुछ तत्सम्बद्ध अंश इस प्रकार हैं—"1921 के लगभग बैजवाड़ा (अब विज़यवाड़ा) में हुए अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के अधिवेशन में आन्ध्र के एक युवक ने एक ध्वज तैयार किया और गांधी जी के पास ले गया। यह दुरंगा था—लाल और हरा दो प्रमुख समुदायों का प्रतीक। गांधी जी ने बीच में एक श्वेत पट्टी जोड़ने का सुझाव दिया ताकि भारत के शेष समुदायों का प्रतिनिधित्व हो सके और चर्खे का भी सुझाव दिया जो प्रगति का प्रतीक था।"

"इस बीच ध्वज के चयन पर सम्मति देने के लिए सात व्यक्तियों की एक समिति नियुक्त की गयी जिसने सुझाव दिया कि एक ही रंग का केसरिया ध्वज हो जिसके धुर बाँए किनारे पर कत्थई रंग का चर्खा हो।"

(ग) राष्ट्रीय भाषा

फिर कुदशा आयी राष्ट्रभाषा पर। स्वामी दयानन्द सरस्वती, सावरकर, बंकिमचन्द्र और तिलक से लेकर गांधी जी, राजा जी जैसे

Scanned by CamScanner

हमारे महान राष्ट्र नायकों ने हिन्दी को एक ऐसी समान राष्ट्रीय जन सम्पर्क भाषा बनाने के लिए कठिन प्रयत्न किया जो देश के एक छोर से दूसरे छोर तक बोली जा सके।

परन्तु मुस्लिम लीग इसे सहन न कर सकी वह हाथ धोकर हिन्दी के पीछे पड़ गयी। उसे हिन्दू आधिपत्य का प्रतीक कहने लगी। लीग ने घोषणा कर दी—वह कांग्रेस से तभी सहयोग करेगी जब कांग्रेस हिन्दी के स्थान पर उर्दू को राष्ट्र भाषा स्वीकार कर लेगी।

परिणाम यह हुआ कि कांग्रेस इस प्रश्न पर भी झुक गयी। यहाँ भी राष्ट्रगीत और राष्ट्रध्वज की भाँति समझौता कर लिया गया। 'हिन्दुस्तानी' नामक एक नयी दोगली खिचड़ीनुमा भाषा आधी हिन्दी, आधी उर्दू का प्रस्ताव रखा गया और उसे कांग्रेस ने हिन्दी के स्थान पर प्रतिष्ठित करना स्वीकार कर लिया। कांग्रेस ने आश्वासन दिया कि ''नागरी और उर्दू दोनों ही लिपियों में लिखी गई हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा होगी। दोनों लिपियों को सरकारी मान्यता दी जायेगी और सम्बद्ध लोगों को चयन करने की छूट होगी। इसी नीति का अनुसरण कांग्रेसी मंत्रिमण्डलों ने किया है।''

जिन्ना ने, जो अन्ततः मुसलमानों का प्रवक्ता बना, कांग्रेस की मूल दुर्बलता को ताड़ लिया और वह इसका लाभ उठाने लगा। उसने नयी-नयी माँगें करनी आरम्भ कर दी। ''चार सूत्रों'' से बढ़कर उसकी माँगें ''सात सूत्रों'' तक और उसके बाद ''चौदह सूत्रों'' तक पहुँच गईं। कांग्रेस जिन्ना के सहयोग रूपी 'स्वर्ण मृग' के पीछे भागती रही। एक के बाद एक माँग वह पूरी करती रही। अन्ततः स्वर्ण मृग तो अदृश्य हो गया और राष्ट्रीय एकता की 'सीता' का अपहरण हो गया।

□

Scanned by CamScanner

स्वातन्त्र्य के द्वार पर

विभाजन के कगार पर प्रारम्भ में मुस्लिम लीग की यह माँग थी कि मुसलमानों को पृथक प्रतिनिधित्व दिया जाये। इलाहाबाद में मुस्लिम लीग का अधिवेशन 1930 में हुआ। उस समय मोहम्मद इकबाल ने अपने भाषण में मुसलमानों के लिये अलग राज्य की माँग की। उसने कहा, "मैं चाहता हूँ कि पंजाब, सिन्ध, उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त, बिलोचिस्तान को एक पृथक मुस्लिम राज्य बना दिया जाये।"

पाकिस्तान की कल्पना

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के छात्र रहमत अली ने 28 जनवरी, 1933 में पाकिस्तान राज्य की कल्पना चार पृष्ठों में रखी थी। पाकिस्तान का प्रत्येक अंग्रेजी अर्थ इस प्रकार लगाया गया था—'P' से पंजाब, 'A' से अफगानिस्तान, 'K' से कश्मीर, 'S' से सिन्ध और 'TAN' बिलोचिस्तान। रहमत अली के प्रस्ताव को जिन्नाह ने 'दिवा स्वप्न' बताया था। चौदह वर्ष बाद वही जिन्ना पाकिस्तान का निर्माता हुआ।

16 अप्रैल, 1933 को ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ने कम्यूनल एवार्ड की घोषणा की जिसके अन्तर्गत मुसलमानों और ईसाइयों को जनसंख्या के अनुपात से अधिक सीट दी। जिस विष वृक्ष का बीजारोपण 1906 में किया गया था उसकी जड़ गहराई तक जम चुकी थी। डॉ. अंसारी जो कांग्रेस के अध्यक्ष थे उन्होंने गांधीजी को सलाह दी कि यह कम्यूनल एवार्ड स्वीकार कर लेना चाहिये यदि मुसलमानों का सहयोग लेना है। गांधीजी ने स्वीकार कर लिया। 1936-37 में पृथक निर्वाचन के आधार

Scanned by CamScanner

पर चुनाव हुए। कांग्रेस को कई राज्यों में बहुमत मिला तथा सरकार बनाई। 1939 में जब कांग्रेसी मंत्री मण्डलों ने इस्तीफा दिया तब मुस्लिम लीग ने मुक्ति दिवस (Day of Deliverence) मनाया तथा जानबूझकर सम्पूर्ण देश में दंगे करवाये।

पाकिस्तान की विधिवत् माँग

23 मार्च, 1940 ई. में मुस्लिम लीग का वार्षिक अधिवेशन लाहौर में हुआ। जिन्नाह अध्यक्ष थे। इस अधिवेशन में पाकिस्तान की माँग की गई थी। प्रस्ताव में उल्लेख किया गया था—"भारत के उत्तर-पश्चिमी, पूर्वी क्षेत्रों में, जहाँ मुसलमानों का बहुमत है परस्पर मिलाकर स्वतन्त्र राज्य का निर्माण किया जाना चाहिये।"

पाकिस्तान को प्रोत्साहन देने के लिये ब्रिटिश गुप्तचर विभाग भी सहायता दे रहा था। अंग्रेजी सरकार जिन्नाह को गांधीजी के बराबर दर्जा देने लगी। 1940 के पश्चात् पाकिस्तान की माँग जोर पकड़ती गई। मोहम्मद अब्दुल कलाम आजाद ने रामगढ़ अधिवेशन में कहा था, "मुसलमान राजनीतिक अल्पसंख्यक नहीं है, यह एक शक्ति है।" जिन्नाह ने आजाद को तार दिया कि "जो काम मुस्लिम लीग न कर सकी वह तुमने कर दिया।"

गांधीजी का जिन्नाह के समक्ष समर्पण

यह इतिहास की बिडम्बना है कि भारत का जन-जन का महानायक जिन्नाह के सामने जाकर कहता है—तुम पाकिस्तान मत बनाओ, मैं तुम्हें सरकार बनाने का पूर्ण अधिकार दिला दूँगा। 22 मई, 1942 को गांधीजी ने आगे बढ़कर वायसराय को सुझाव दिया, **"जिन्नाह को सरकार बनाने का पूर्ण अधिकार दे दिया जाय और उनके मंत्रीमंडल के सभी सदस्य मुसलमान हो सकते हैं।" वायसराय ने यह कहकर अमान्य कर दिया कि उनके अनुयायी नहीं मानेंगे। यही सुझाव गांधीजी ने चार वर्ष के पश्चात् कैबिनेट मिशन के सामने रखा। तीसरी बार पुनः यही सुझाव लार्ड माउन्टबैटन के सामने रखा, तब**

Scanned by CamScanner

वायसराय को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। *(एच.वी. हडसन– दी ग्रेट डिवाइड पृष्ठ 221)*

क्रिप्स मिशन

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर कूपलैण्ड ने क्रिप्स प्लान तैयार किया। उसमें मुसलमानों को पूरा सन्तुष्ट करने का प्रयास किया पर जिन्नाह ने स्वतंत्र पृथक राज्य की माँग को पुनः दोहराया तथा यह कहकर कि क्रिप्स मिशन के अन्तर्गत दीमक लगा पाकिस्तान है वह मुझे नहीं चाहिये।

8 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। गांधीजी भी बन्दी बना लिये गये। सितम्बर 1942 में आन्दोलन की कमर टूट गई। 9 मई, 1944 को गांधीजी जेल से बाहर आये और उन्होंने अपनी ओर से जिन्नाह से वार्त्ता की। मौलाना आजाद ने इसे गांधीजी की बड़ी राजनीतिक भूल बताया।

राष्ट्रीय चेतना की उद्दाम लहर और भारत छोड़ने की तैयारी

मार्च 1944 में आजाद हिन्द फौज भारत की सीमा पर पहुँच गई। उधर जर्मनी ब्रिटेन की कमर तोड़ने में लगा हुआ था। 1945 में द्वितीय महायुद्ध का दृश्य बदल गया। 1945 में जापान की हार होने लगी। सुभाष बोस के 'दिल्ली चलो' के नारे ने जनता में स्फूर्ति का संचार किया। नवम्बर 1945 में अंग्रेज सरकार ने आजाद हिन्द फौज के नायकों तथा सैनिकों पर लाल किले में मुकदमा चलाया। जनता के हृदय में इन वीरों के प्रति श्रद्धा थी। सारे देश में अंग्रेजों के विरुद्ध नारे लगने लगे, 'लाल किले को तोड़ दो, आजाद हिन्द को छोड़ दो'। सरकार को मजबूर होकर आजाद हिन्द के सैनिकों को छोड़ना पड़ा। उधर देशभक्ति की चिनगारी का विस्फोट जल सेना के विद्रोह के रूप में फूट पड़ा। ब्रिटेन को विश्वास हो गया अब हमें जाना होगा। इस तथ्य को समझकर सरकार ने कैबिनेट मिशन को सन् 1946 में भेजा। कांग्रेस

Scanned by CamScanner

ने केन्द्र सरकार में अपने बराबर मंत्री मंडल की संख्या रखने का प्रस्ताव जिन्नाह के सम्मुख रखा पर जिन्नाह पृथक राज्य की माँग पर डटा रहा। कैबिनेट मिशन असफल होकर चला गया।

लीग की सशस्त्र तैयारी–हिन्दुओं का कत्लेआम

फिरोज खां नून ने कहा, ''यदि पृथक राज्य पर उनके अधिकार को स्वीकृत नहीं किया गया तो खून की नदियाँ बहेंगी।'' सुहारावर्दी ने कहा, ''मुसलमानं एक मरणासन्न जाति नहीं है।'' इस्माइल चुन्द्रीगर ने कहा, ''हम इस देश पर 500 वर्ष तक राज करते रहे हैं; इन लोगों के हाथों में शासन नहीं जाने देंगे। जिन्नाह ने सभी प्रान्तों में मुस्लिम नेशनल गार्ड का गठन किया; उनको शस्त्र बाँटे गये। 16 अगस्त, 1946 को सीधी कार्यवाही (Direct Action) दिवस घोषित किया। देशभर में दंगे शुरू हुए। अकेले कलकत्ता में 10,000 व्यक्ति मरे। अक्टूबर 1946 में नोआखली का भीषण हत्याकांड हुआ। बलात्कार, अपहरण, बलात् धर्म परिवर्तन हुए। बिहार में मुस्लिम सेना भेजी गई; उसने हजारों हिन्दुओं को गोली से भून डाला।

अन्तरिम सरकार का गठन

2 सितम्बर, 1946 को अन्तरिम सरकार बनी। पटेल के स्थान पर नेहरू को अन्तरिम सरकार का प्रधानमंत्री गांधीजी के कहने पर कांग्रेस ने बनाया। लियाकत अली योजना से वित्त मंत्री बने। पटेल को गृहमंत्री बनाया गया। एक पुलिस मैन की नियुक्ति के लिये स्वीकृति लेनी हो तो वित्त मंत्रालय कठिनाइयाँ उत्पन्न करता था। पटेल को अनुमान हुआ कि मुस्लिम लीग के साथ मिलकर काम करना कठिन है।

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री एटली ने घोषणा की कि जून 1948 तक ब्रिटेन भारत छोड़ देगा। इस घोषणा के पश्चात् लाहौर, अमृतसर में मुसलमानों द्वारा भीषण दंगे हुये। सिखों और हिन्दुओं की जबर्दस्त जान-माल की हानि हुई। पुलिस मूक दर्शक मात्र थी।

Scanned by CamScanner

पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा

गांधीजी ने कहा था, ''विभाजन मेरी लाश पर होगा।'' पटेल ने कहा, ''खून की नदियाँ बह जायेंगी पर पाकिस्तान नहीं बनेगा।'' नेहरू ने पाकिस्तान के बारे में कहा था, ''पाकिस्तान एक काल्पनिक बेहूदगी (Fantastic nonsense) है।'' इन सब वीरतापूर्ण उक्तियों के बावजूद कुछ ही मास के पश्चात् भारत का विभाजन हो गया। 8 मार्च, 1947 को गांधीजी की बिना राय लिये कांग्रेस कार्यकारिणी ने एक प्रस्ताव पास किया कि पंजाब और बंगाल का हिन्दू, मुसलमान जनसंख्या के आधार पर विभाजन कर दिया जाये। यह अप्रत्यक्ष रूप से पाकिस्तान स्वीकार करने की भूमिका थी।

थके नेता

गांधीजी ने कहा था, ''यह एक दुर्भाग्यपूर्ण बात थी कि उनके सहयोगी जेल से निकलने के पश्चात् थके हुये तथा उत्साहहीन थे। वे किसी भी हालत में ब्रिटेन से समझौता करना चाहते थें और इसमें बुरी बात थी कि वे सत्ता के भूखे थे।''

(दुर्गादास-भारत-कर्जन से नेहरू तथा उसके पश्चात् पृष्ठ 226-27)

महात्मा गांधीजी के अनुसार उनके अनुयायियों ने विश्वासघात किया। गांधीजी का कांग्रेस की कार्यकारिणी पर प्रभाव धीरे-धीरे कम हो रहा था। माउंटबेटन दम्पत्ति ने नेहरू को प्रभावित करने में सफलता प्राप्त की थी।

आजादी मिली, पर देश बँट गया

3 जून, 1947 को माउंटबेटन ने भारत विभाजन की योजना नेताओं के सम्मुख रखी। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन 24 जून को दिल्ली में हुआ। माउंटबेटन योजना को स्वीकृत करने के लिये पंडित गोविन्द बल्लभ पंत ने प्रस्ताव रखा। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन ने इसके विरोध में भावोत्तेजक भाषण दिया जिसका हर्षध्वनि से

Scanned by CamScanner

स्वागत किया गया लेकिन गांधीजी के कहने पर कांग्रेस नें विभाजन का प्रस्ताव पास कर दिया।

इस प्रकार माता के पुत्र ही अपनी माँ का अंग विच्छेद करके पाप के भागी बन गये। भारत की भावी पीढ़ी इनको माफ नहीं करेगी। 15 अगस्त को भारत का विभाजन हो गया। विभाजन के समय जो सीमा का निर्धारण किया गया उसमें भारत के साथ अन्याय किया। असम का मुस्लिम बहुल जिला पाकिस्तान को दिया गया, परन्तु सिन्ध का हिन्दू बहुल 'थारपारकर' जिला भारत के साथ नहीं मिलाया गया। चटगाँव पर्वतीय क्षेत्र में मुस्लिम केवल तीन प्रतिशत थे परन्तु इसे पाकिस्तान के साथ मिला दिया गया। इसी प्रकार हिन्दू बहुल खुलना जिला भी पाक को दे दिया गया।

Scanned by CamScanner

क्या विभाजन टल सकता था?

मुस्लिम लीग की हठधर्मिता और हिंसात्मक कार्रवाइयों के कारण विवश होकर कांग्रेस ने विभाजन को स्वीकृति दी। परन्तु यदि यह स्वीकृति नहीं दी जाती तो क्या होता? अधिक से अधिक गृहयुद्ध होता। परन्तु क्या देश की अखण्डता के लिये गृहयुद्ध नहीं किया जा सकता? अमरीकी इतिहास में अब्राहम लिंकन ने देश विभाजन और गृहयुद्ध में से गृहयुद्ध को चुना और अन्ततोगत्वा वे देश को अखण्ड रखने में सफल हुए। आज कोई भी उन्हें युद्धपिपासु नहीं कहता, उन्हें महापुरुष माना जाता है।

यह भी कहा जाता है कि गृहयुद्ध में भीषण रक्तपात होता। तो क्या विभाजन के कारण भीषण रक्तपात नहीं हुआ? संभवतः गृहयुद्ध में होता उससे भी अधिक हुआ और साथ ही देश का विभाजन भी हो गया। गृहयुद्ध में रक्तपात भी कम होता और देश भी अखण्ड रहता।

क्या अंग्रेज इस स्थिति में थे कि वे अधिक दिनों तक हमारी स्वाधीनता को रोक पाते? बिल्कुल नहीं। इसके अलावा जैसे मुस्लिम लीग कई मामलों में अड़ जाती थी, वैसे ही कांग्रेस भी कुछ मामलों में अड़ती थी (उदाहरण : "वैवल योजना" में कांग्रेस के कोटे में से एक मुसलमान मंत्री बनाना)। फिर अखण्ड भारत के मुद्दे पर कांग्रेस क्यों नहीं अड़ी? (इस सम्बन्ध में लिओनार्ड मोस्ले को नेहरू जी ने जो उत्तर दिया वह ध्यान देने योग्य है—"वस्तुस्थिति यह है कि हम बूढ़े हो गये थे, संघर्ष करते-करते थक गये थे। विभाजन की माँग का विरोध करते तो हमें और लम्बा संघर्ष करना पड़ता जिसके लिये हम मानसिक रूप से तैयार न थे।" पंडित नेहरू के घनिष्ठ मित्र श्री कृष्ण मेनन ने कहा है,

Scanned by CamScanner

''कांग्रेसजन राजसत्ता और पद के लिये इतने लोलुप थे कि राष्ट्र की रक्षा के लिये संघर्ष चालू रखने का उनमें किंचिन्मात्र भी इच्छा नहीं थी।'') यदि कांग्रेस इस मुद्दे पर अड़ जाती तो परिस्थितियाँ ही बदल जातीं। मुस्लिम लीग को सब मुसलमानों का समर्थन नहीं मिलता, क्योंकि पाकिस्तान निश्चित बनेगा ऐसा स्पष्ट रूप से दिखने के बाद ही (याने 1944-45 के बाद) सब मुसलमानों ने मुस्लिम लीग का समर्थन किया था। उससे पहले तो लीग को 25 प्रतिशत से भी कम मुसलमानों का समर्थन प्राप्त था। साथ ही लीग का सारा राजनैतिक खेल अंग्रेजों के संरक्षण और प्रोत्साहन से चल रहा था। वह समाप्त हो जाता तो मुस्लिम लीग पंगु हो जाती। अंग्रेज भी द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण जर्जर हो गये थे और इस कारण भारत की स्वाधीनता को अधिक समय तक टालने की स्थिति में नहीं थे। इसलिये कांग्रेस के अड़ जाने के बाद मुस्लिम लीग की उपेक्षा करके उसे भारत को स्वाधीनता देनी पड़ती, वह भी अखण्ड रूँप में और मुस्लिम लीग भी दंगे इत्यादि पूरे जोर-शोर से न कर पाती क्योंकि न तो उन्हें मुसलमानों का पूरा समर्थन-सहयोग मिलता और न ही अंग्रेजों का समर्थन-प्रोत्साहन। इसके अलावा पाकिस्तान आन्दोलन की कुछ आन्तरिक दुर्बलताएँ थीं जिनके कारण अखण्ड भारत के मार्ग में बहुत अधिक बाधा न आती। 1945-46 के चुनाव में लीग को प्रस्तावित पाकिस्तान के प्रान्तों में इतना समर्थन नहीं मिला था कि वह अपने बलबूते पर सरकार बना पाती। पाकिस्तान के लिये अधिक समर्थन तो हिन्दू-बहुल प्रान्तों के मुसलमानों का था। अत: पाकिस्तान नहीं बनेगा ऐसी स्थिति उत्पन्न होते ही सारा वातावरण बदल जाता। यही कारण है कि जिस जिन्ना की पाकिस्तान योजना में कश्मीर, पूर्वी पंजाब, पश्चिमी बंगाल, हैदराबाद, द्रविड़स्तान, झारखंड और पूर्व-पश्चिम पाकिस्तान को जोड़नेवाला गलियारा भी था उसने इनकी माँग छोड़कर उसी के शब्दों में ''कटा-फटा, क्षत-विक्षत और घुन लगा'' पाकिस्तान स्वीकार कर लिया।

एक प्रश्न बार-बार मन में उठना स्वाभाविक है। जो गांधीजी अनेक मुद्दों पर अनशन करके जान की बाजी लगाते थे, उन्होंने अखण्ड-

Scanned by CamScanner

भारत के प्रश्न पर ऐसा क्यों नहीं किया? कभी-कभी तो केवल गांधीजी की जान बचाने के लिये अनिच्छापूर्वक कुछ बातें मानी गईं। फिर अखण्ड-भारत इस जन-जन के हृदय की आवाज के प्रश्न पर क्या सारा देश एकजुट होकर उनके पीछे खड़ा नहीं रहता? ऐसी स्थिति में क्या देश का विभाजन हो पाता?

Scanned by CamScanner

क्या मिला विभाजन से?

विभाजन के समर्थक तर्क देते थे कि—साम्प्रदायिक दंगे समाप्त हो जायेंगे। हिन्दू-मुसलमान अपने देश में सुखपूर्वक रह सकेंगे। अनुमान गलत निकला। हमारे देश में विभाजन के पश्चात् साम्प्रदायिक दंगे अधिक हुये। पाकिस्तान इस्लाम के नाम पर एक नहीं रहा, बंगलादेश निर्माण द्वि-राष्ट्रवाद के सिद्धान्त की कब्र है। परन्तु 50 वर्षों का अनुभव बतलाता है कि विभाजन से किसी समस्या का हल नहीं हुआ वरन् आज सामने दिख रही समस्याओं के पीछे का कारण विभांजन ही है—

क. सीमायें असुरक्षित : बार-बार युद्ध, नदी, जल का विवाद।

ख. आन्तरिक समस्यायें : घुसपैठ, आतंकवाद, तस्करी आदि। झुलसता कश्मीर, पूर्वांचल।

ग. विदेश नीति में सबसे बड़ी बाधा : पाकिस्तान द्वारा कश्मीर मुद्दे को हर मंच पर उठाना। भारत की सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का विरोध।

घ. आर्थिक समस्या : रक्षा व्यय में अकारण व्यय। अप्राकृतिक सीमा पर रक्षा व्यय न हो तो भारत की सकल राष्ट्रीय उत्पादन में 4 प्रतिशत की वृद्धि।

अखण्ड भारत का स्वप्न साकार होगा

राष्ट्र निर्माण के लिये भारत का अखण्ड होना अनिवार्य है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था, "भारत का विभाजन अप्राकृतिक है। अखण्ड होना भारत की नियति है। जहाँ भारत का हिन्दू मानस खंडित मातृभूमि

Scanned by CamScanner

पाकर कुंठित है वहीं पाकिस्तान भी अपनी जड़ों के लिए भटक रहा है—वह पाणिनि की जयंती, तक्षशिला तथा बुद्ध की प्रतिमाओं में इतिहास खोज रहा है। पृथक बंगलादेश के निर्माण ने सिद्ध कर दिया कि पूजा पद्धति (Religion) राष्ट्रीयता का मूल आधार नहीं है। विश्व के इतिहास में वियतनाम का मिलन, जर्मनी का एकीकरण संकेत दे रहा है कि विभाजित भारत भी अखंड हो सकता है। इतिहास बताता है राष्ट्र के विभाजित भागों की अदम्य इच्छा और उत्कट प्रयास ने ही पुनः मिलन कराया। हमें लम्बा समय लग सकता है। इस कारण सबसे पहले आवश्यकता है कि अखंड भारत के विषय को, जन-जन तक पहुँचायें। 'अखण्ड भारत स्मृति दिवस' के रूप में युवापीढ़ी को जागृत करना होगा। इज्रायल ने अपनी मातृभूमि को प्राप्त करने के लिये दीर्घकाल तक प्रयास किया। एक दूसरे को पत्र लिखते समय अगले वर्ष यरूशलम में मिलेंगे—ऐसा कहना कभी नहीं भूलते थे। आज इज्रायल स्वाभिमानी राष्ट्र के रूप में खड़ा है। हम भी हमारे घरों में अखण्ड-भारत का मानचित्र लगायें। अखण्ड भारत का चित्र हमारी आँखों के सामने रहेगा तो—खंडित भारत का चित्र हमारी आँखों को चुभेगा। संकल्प ही स्वप्न साकार करेगा। याचि देही याचि डोला (इसी देह से, इन्हीं आँखों से) लक्ष्य प्राप्त करेंगे। इस तरह का संकल्प लेने वाले कम संख्या में हों, चिन्ता की कोई बात नहीं क्योंकि कहा गया है कि 'Determined minority makes history.' भारत फिर से अखण्ड होगा यह तय है। एक योगी की भविष्य वाणी सत्य सिद्ध होगी।

वन्दे मातरम्!

□

Scanned by CamScanner

स्वावलम्बी भारत कैसे बने?

आज हम स्वतन्त्रता की स्वर्ण जयन्ती मना रहे हैं। 15 अगस्त, 1947 को सारे संसार ने स्वतंत्र भारत देखा। लगभग सौ-सवा सौ साल की परतंत्रता के उपरान्त भारत विश्व में 'स्वतन्त्र भारत' के रूप में स्थापित हुआ। लेकिन इस स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिए हमें बहुत बड़ी कीमत को भी चुकाना पड़ा। अखण्ड भारत को खण्डित करके हमें स्वाधीनता मिली। भारत माता के टुकड़े हुए। स्वाधीनता की इस खुशी को विभाजन का दर्द भी सहने को मिला। ऐसे समय में जहाँ हम सब इस विभाजन को दूर कर अखण्ड भारत के निर्माण में सतत् प्रयत्न करें, वहीं आज की गम्भीर स्थिति का भी आकलन करें। देश आजाद होने के इतने वर्षों बाद भी देश में जागृति, चैतन्य, भावबोध क्यों नहीं है? क्यों देश आर्थिक तंगी, गरीबी, बेरोजगारी, जाति-पाँति वैमनस्य, निराशा और लाचारी का जीवन व्यतीत करने को विवश है? राष्ट्रीय चरित्र का इतना पतन क्यों कर हुआ? आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक सभी क्षेत्रों में गिरावट के क्या कारण है? भारतीय स्वतन्त्रता का वृक्ष आज क्यों जर्जर हो रहा है। जिस स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ा तथा दासता की शृंखला में जकड़े हुए देशवासियों को स्वाधीनता दिलवाने का लक्ष्य अनेक वीर देशभक्तों ने बनाया। इस आदर्श को पूरा करने के लिए, अपने जीवन की इस साधना की सिद्धि में उन्होंने घर-परिवार की स्नेह-ममता, यौवन के सुखोपभोग, शिक्षा आदि को तिलांजलि देकर आँधी, पानी और तूफान में जीवन की सार्थकता का अनुभव किया। उन स्वतन्त्रता सेनानियों ने अपने घर-बार फूँक दिये,

Scanned by CamScanner

अंडमान और मांडले की जेलों में अनेक प्रकार की प्राणांतिक यातनाएँ झेलीं, फाँसी के फँदों को चूमा, वन्देमातरम् और भारतमाता की जय का मंत्रोच्चार करते हुए सतत् अपने लक्ष्य सिद्धि की ओर बढ़ते रहे। कोई बाधा, कोई संकट, इस तूफानी उफान के सामने टिका नहीं। स्वभाषा, स्वधर्म, सभ्यता, संस्कृति, आचार-विचार, रहन-सहन तथा स्वदेश भूषा के प्रति समर्पित इन अलमस्त दीवाने वीरों ने आजादी की राह प्रशस्त की। ईस्ट इंडिया कम्पनी की लूट से ये परिचित थे। इसलिए 'स्व' का बाना धारण करने वाले अनेक वीरों ने यह पहचान लिया था कि जब तक अंग्रेजों का राज्य है और देश गुलाम है, तब तक हम अपने राष्ट्रीय जीवनोद्देश्य को न तो प्रकट ही कर सकते हैं और न ही इसकी स्थापना सम्भव है। कविवर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपने देश की सम्पत्ति को बाहर जाते देख कहा—

"यै धन विदेश चलिजात, यहै अति ख्वारी।"

विदेशी वस्त्रों की होली तथा स्वभाषा के प्रति उनका अटूट प्रेम इसी स्वात्म की पहचान थी। उन्हें पता था कि भाषा केवल सम्प्रेषण ही नहीं करती, चरित्र का उद्घाटन भी करती है। मात्र व्यक्ति के चरित्र को ही नहीं, पूरे राष्ट्र के चरित्र को उद्घाटित करती है, उजागर करती है।

स्वातन्त्र्य और स्वदेशी आन्दोलन

हम अंग्रेजों के गुलाम थे इसलिए ये 'स्वदेशी' आन्दोलन अंग्रेजों की राजनीतिक गुलामी से मुक्ति का कारण बना। इसलिए इस स्वदेशी अभिव्यक्ति का माध्यम बना सूत कातना, चरखा चलाना, खादी पहनना, असहयोग आन्दोलन, स्वभाषा प्रेम तथा इंग्लैण्ड में बनी वस्तुओं का बहिष्कार और उनकी होली जलाना। लेकिन आजादी मिलने के बाद सच्चे राष्ट्रबोध के प्रति हम उपेक्षा बरतते आ रहे हैं। अंग्रेजों के भारत से निष्कासित होने के बाद राष्ट्रनिर्माण के हमारे प्रयत्नों को सही दिशा एवं मार्गदर्शन प्राप्त नहीं हुआ। स्वराज्य मिलने के बाद हमें 'स्व' से जुड़ना था। अपनी परम्परा, मूल्यबोध, आचार, सभ्यता, संस्कृति से जुड़ना था और हम जुड़ गए परायों से।

Scanned by CamScanner

विदेशों से ली गई विचारधाराओं के आधार पर सब प्रयत्न होते दिखाई दिए। आर्थिक, राजनैतिक, एवं सामाजिक सभी क्षेत्रों में चिन्तन का आधार बनी विदेशी विचार पद्धति। उस प्रकार की माँगी हुई उधार पद्धति से हमारे देश को हमारी सभ्यता, संस्कृति तथा त्याग, परिश्रम व बलिदान की प्रेरणा सम्भव नहीं थी। उपभोक्तावाद की संस्कृति, खाओ, पीओ और मौज उड़ाओ की सभ्यता से समाज में निराशा का वातावरण बना। इसलिए अपने राष्ट्रबोध से विरहित देश में जो स्वार्थपूर्ण राजनीति जन्मी वह स्वदेश एवं स्वराष्ट्र की व्यवस्था नहीं थी बल्कि स्वार्थपूर्ण क्रय-विक्रय का बाजार बनी।

स्वतन्त्रता का सीमा विकरण स्वच्छन्दता है, आजादी का दुरुपयोग स्वच्छन्दता है। स्वतन्त्रता के 'स्व' पर 'तन्त्र' की शिथिलता स्वच्छन्दता है। व्यक्ति जब स्वतंत्रता के साथ स्वच्छन्दता का प्रयोग करे तो वह प्रमादी बन जाता है। स्वच्छन्द राष्ट्र तो अपनी स्वतन्त्रता खोकर परतन्त्रता ओढ़ता है। आर्थिक स्वच्छन्दता विलासिता है तथा विलासिता अंधी होती है, जो मनुष्य को बिगाड़ देती है। देश ने कठिन तपस्या से आजादी प्राप्त की थी। आजादी मिली तो तपस्या विलासिता में बदल गई। सत्ता के नशे ने राजनेताओं के मन में स्वच्छन्दता जागृत की। देश को लूटने चूसने की होड़ लग गई। मान-मर्यादाएँ धूल में मिल गई।

ऐसा क्यों हुआ

भयावह एवं घातक परिस्थिति के बारे में अगर विचार करें कि आखिर ऐसा क्यों हुआ? राष्ट्र की स्वतन्त्रता के हितार्थ फाँसी के फंदों को चूमने वाले अनेकानेक शहीदों के बलिदान को हमने क्यों विस्मृत कर दिया? आर्थिक बन्दर बाँट ने क्यों हमें इतना पतित बना दिया? राष्ट्रीय स्वाभिमान को ताक पर रख अपने व्यक्तिगत तथा पारिवारिक स्वार्थ के लिए देश की आर्थिक स्वतन्त्रता, देश का सार्वभौमत्व विदेशियों के हाथों देने पर हमें लज्जा नहीं आई?

आजादी की स्वर्ण जयन्ती मनाने के बाद भी देश की विडम्बना ही कही जाएगी कि आज हमें स्वदेशी आन्दोलन फिर से प्रारम्भ करना

Scanned by CamScanner

पड़ रहा है। माननीय बाला साहब देवरस के अनुसार—"आज अपने देश में अनेक विदेशी कम्पनियाँ उद्योग व्यवसाय तथा व्यापार में भी अग्रसर हुई हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ देश की अनमोल साधन-सम्पत्ति का केवल दोहन ही नहीं शोषण भी कर रही हैं, साथ ही साथ, सब प्रकार की खुफिया जानकारी भी प्राप्त करती हैं। ये बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ, विश्व बैंक तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष आदि विदेशी एजेन्सियाँ भारत की अर्थव्यवस्था को पंगु बनाकर अपनी मुट्ठी में रखने के लिए आगे बढ़ रही हैं। हमें सावधान रहना होगा। ऐसी ही केवल व्यापार करने आई विदेशी 'ईस्ट इंडिया कम्पनी' ने ही हमें गुलाम बनाया।" दोषपूर्ण आर्थिक नीतियों तथा व्यक्तिगत वैभव की दौड़ ने देश को दीवालिया बनाने की हद तक ला दिया है। ऋणों के बोझ से दबे भारतवर्ष की स्थिति पर विचार करें तो हम पायेंगे कि भारत कभी सोने की चिड़िया कहलाता था। लुटेरे इसकी सम्पत्ति को लूटने के प्रयास से बाहर से आये और अनेकानेक सम्पत्ति, हीरे-जवाहरात अपने साथ लाद कर ले गए। लेकिन 'ईस्ट इंडिया कम्पनी' ने इस देश को सदा-सर्वदा लूटने की योजना बनाई। देश-विदेश के मध्य परस्पर व्यापार की परम्परा तो सदियों से चलती रही है, परन्तु पुराने युग में इस प्रकार के व्यापारियों का मकड़जाल नहीं था। योरोप की औद्योगिक क्रान्ति के साथ-साथ बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का गठन हुआ। ईस्ट इंडिया कम्पनी इन्हीं प्रारम्भिक कम्पनियों में से एक बड़ी कम्पनी थी जिसका चरित्र लुटेरों का था। भारत में इस कम्पनी ने डच और पुर्तगाली कम्पनियों को खदेड़कर अपना एकाधिकार तथा साम्राज्य स्थापित किया। इस कम्पनी ने ऐसी व्यवस्था बनाई कि इस देश की पूंजी निरन्तर इंग्लैण्ड को स्थानान्तरित होती रहे। उस जमाने में भी प्रत्येक वर्ष लगभग 25 करोड़ रुपये की पूंजी ये व्यापार के बहाने इंग्लैण्ड को भेजते। लूट का यह तन्त्र इस तरह से शुरू हो गया तथा लूटने की इस प्रकार की व्यवस्था बनी जो बाद में नियमित एवं सुव्यवस्थित पूंजी को स्थानान्तरण करने के रूप में विकसित हो गई। इसकी लूट के कारण सोने का भारत अकाल और महामारी का शिकार हुआ।

Scanned by CamScanner

आर्थिक परतन्त्रता की ओर

आज देश आर्थिक परतन्त्रता की ओर निरन्तर बढ़ रहा है। रुपयों का अवमूल्यन और सोने को गिरवी रखना जैसी अनेक शोषणयुक्त शर्तों को मानकर, ऋण लेकर देश को गिरवी रखा जा रहा है। विश्व बैंक और मुद्राकोष से जिस तरह से ऋण लिया जा रहा है, ऋण लेने के लिए उनकी मनमानी शर्तों को जिस तरह से माना जा रहा है और उनके द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार जिस प्रकार से घरेलू नीतियाँ को ढाला तथा माना जा रहा है—इन सबको देखकर समझकर साफ लगता है कि भविष्य में देश बुरी स्थिति में फँसने जा रहा है। स्वाधीनता के बाद हमारे पास 3452 करोड़ रुपये की पूंजी थी। 1950-51 तक हमने उसे खर्च किया और 32 करोड़ रुपये का ऋण हो गया। पहली पंचवर्षीय योजना के बाद 317 करोड़ रुपया तथा दूसरी पंचवर्षीय योजना के उपरान्त 2252 करोड़ रुपया विदेशी ऋण हमारे सिर पर था। यह ऋण लगातार बढ़कर 1985 में 35725 करोड़, 1989 में 62300 करोड़ और 1991 में 1 लाख 62 करोड़ तक पहुँच गया है। देश की आर्थिक स्थिति इतनी दुर्बल तथा जर्जर हो गई है कि ऋण चुकाना तो दूर की बात, हम आज सालाना ब्याज भी चुकाने की स्थिति में नहीं। 1,62,000 करोड़ रुपये का वार्षिक ब्याज होता है 30,000 करोड़ रुपये। इस ब्याज को चुकाने के लिए हमें 14,000 से 17,000 रुपये का कर्ज अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष से स्वीकृत हुआ। अत: यह स्पष्ट है कि यह ऋण किसी विकास योजना के लिए न होकर मिलने वाले ऋण का 50% ऋण ब्याज चुकाने में चला जाता है।

अगर इस ऋण से हम बाहर जाना चाहते हैं तो हमारा आयात कम हो तथा निर्यात बढ़े। इससे हमारे पास विदेशी मुद्रा एकत्रित होगी और हम विदेशी मुद्रा में विदेशी ऋण चुका पायेंगे किन्तु निर्यात के मुकाबले आयात बढ़ता जा रहा है और इस प्रकार हर वर्ष भुगतान का सन्तुलन बिगड़ता जा रहा है। इस प्रकार हम ऋण जाल में और गहराई से फँसते जा रहे हैं। यह ऋण जाल वास्तव में पश्चिमी देशों के साम्राज्यवाद

Scanned by CamScanner

का रूप है। विश्व के विकसित देश एकत्रित होकर अर्थबल के आधार पर साम्राज्यवाद की पुनर्स्थापना के प्रयास में लगे हैं। गरीब देशों को ऋण के जाल में फँसाकर उनके आर्थिक व्यवहार अपने हाथ में लेने के प्रयास कर रहे हैं। आज कई लाख करोड़ रुपयों का कर्ज हमारे ऊपर है। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत वर्ष के नीति निर्धारण करने वालों ने देश की अर्थव्यवस्था में पूँजी जुटाने का यह जो उपक्रम किया है वह काफी त्रटिपूर्ण है। पश्चिमी जीवन, पाश्चात्य संस्कृति और पाश्चात्य जीवन मूल्यों को भी विदेशी ऋण के साथ-साथ लोगों के जीवन में उतारने के परिणामस्वरूप एक उपभोक्तावादी समाज का रूप धारण करने के लिए राष्ट्र पूरी तरह से विवश हो गया है। इस प्रकार हमारा देश एवं सरकार विशाल बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के समक्ष टिक नहीं सकती। विश्व की सौ बड़ी कम्पनियों में से पचास से अधिक ने इस देश में पंजा जमा लिया है। विकासशील देशों को इन विकसित देशों की जितनी सहायता प्राप्त होती है उससे तीन गुना कर्ज के ब्याज में देना होता है। पूंजी निवेश के इस ढोल का पोल भी स्पष्ट है। ये व्यापारी जो अपने देश का धन हमारे देश में लगा रहे हैं, मूर्ख नहीं हैं। ये विदेशी कम्पनियाँ, मात्र पाँच प्रतिशत पूंजी लगाती है, शेष 95 प्रतिशत यहाँ के बैंक से ऋण तथा जनता के बीच शेयरों को बेचकर एकत्रित करती हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के उपरान्त विश्व एक भीषण मंदी के दौर से गुजर रहा था। उस समय व्यापार को कुछ गति देने के लिए कुछ राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने इकट्ठे होकर आपस में व्यापार तथा तटकर से सम्बन्धित 'गैट' पर समझौते किए। इसी को डंकल प्रस्तावों का नाम दिया गया। डंकल प्रस्तावों के माध्यम से विदेशी शक्तियाँ अपनी गिद्ध दृष्टि भारतीय कृषि पर गड़ाकर उसे परावलम्बन की ओर ढकेलने का प्रयास कर रही हैं। कृषि ही नहीं उससे जुड़ी खाद, बीज, बैल, पेड़-पौधे तक पर अधिकार बहुराष्ट्रीय संस्थाओं का हो जायेगा। डंकल प्रस्ताव से खेती और किसान पर एक ऐसी गुलामी का शिकंजा आ जायेगा जिससे कृषि एवं कृषक, जो अभी तक स्वतंत्र एवं स्वावलम्बी थे, एक मजदूर या गुलाम हो जायेंगे जिस स्वावलम्बन एवं समर्थता की

Scanned by CamScanner

बात आजादी के उपरान्त हमें दिखाई देनी चाहिए थी, वह अब दूर-दूर तक दिखाई नहीं देती। स्पष्ट रूप से दीख रहा है कि हम लोग आर्थिक एवं मानसिक परतन्त्रता की ओर बढ़ रहे हैं। अगर सशर्त कर्ज लेने की प्रक्रिया पर रोक नहीं लगाई गई तो फिर देश को आर्थिक गर्त के गढ़े में गिरने से नहीं रोका जा सकेगा। कर्ज की स्थिति सुरसा की भाँति दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती है। देश में लगभग 1500 बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ हैं तथा उपभोक्ता वस्तुओं के क्षेत्र में 96 प्रतिशत बाजार इनके सामानों से भरे हैं। दवा के क्षेत्र में 75 प्रतिशत बाजार पर इनका कब्जा है। 95 प्रतिशत इनकी दवाइयाँ अनावश्यक हैं। 1800 करोड़ रुपयों का लाभ ये इन अनावश्यक दवाओं से प्राप्त करके देश से बाहर भेजती हैं। पेप्सी कोला ने भारत में 50,000 लोगों को रोजगार देने का आश्वासन दिया था, पर मात्र 481 लोगों को ही काम प्राप्त हुआ। हिन्दुस्तान लीवर कम्पनी 1920 में भारत में आई। 1,20,000 रुपयों की पूंजी से इसने कारोबार किया, पर आज केवल साबुन उद्योग में यह 1,400 करोड़ रुपयों का कारोबार कर रही है। सन् 1981-91 के बीच हमारे बन्द उद्योगों की संख्या 25,000 से बढ़कर तीन लाख हो गई है तथा विदेशी कर्ज लाखों करोड़ हो गया है। सभी अमरीकी कम्पनियाँ इसे काम में लगी हैं कि भारत को अपना उपनिवेश बना दिया जाए।

जनजागरण : एकमात्र निदान

लेकिन इस सबके बाद में निराश होने की आवश्यकता नहीं है। आज भी अगर भारतवासी अपने अन्दर के सुप्त पौरुष को जगायें, अपनी प्रतिभा एवं मेधा को पहचानें तो बहुत कुछ सम्भव है। हमारे पास सब हैं—जनशक्ति है, साधन हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का प्रवेश और आर्थिक परतन्त्रता का संकट पैदा करने वाली षड्यन्त्रकारी शक्तियों का मुकाबला स्वदेशी भाव के जागृत करने तथा समाज को हिम्मत से खड़ा करने से सम्भव है। खण्डित आजादी का दर्द अभी हम भुला नहीं पाये हैं कि आर्थिक गुलामी का यह शिकंजा हमारे ऊपर कसा जा रहा है। लेकिन इन समस्याओं का निराकरण हो सकता है, अगर समाज का एक-एक

Scanned by CamScanner

व्यक्ति क्रियाशील, सजग, सशक्त एवं सक्रिय हो। व्यक्ति-व्यक्ति का निर्माण, व्यक्ति-व्यक्ति में जागृति, व्यक्ति-व्यक्ति में स्वावलम्बी भावना पैदा करने का कार्य प्रारम्भ से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कर रहा है। इन सारी समस्याओं का समाधान भी संघ मंत्र में है, संघ कार्य के विस्तार में है। स्वतन्त्रता से पहले, पराधीन भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए जब यह विचार समाज में जागृत हुआ, तब 15 अगस्त, 1947 को भारत को स्वतन्त्रता मिली। आज भी समाज में यह विचार जागृत करने की आवश्यकता है कि हमारा स्वतन्त्र भारत समृद्ध बने, सुरक्षित हो, अखण्ड बने। इसी भावना और विचार को मन में संजोकर, इस भावभूमि से जागृत होकर हम ऐसे मार्ग को प्रशस्त करें कि एक स्वतन्त्र, अखण्ड, समृद्ध, सुरक्षित, जागृत भारत का निर्माण हो।

□□□

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

हरियाणा प्रांत

मुद्रक : ग्राफिक वर्ल्ड

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

मूल्य : रु. 3.00

Scanned by CamScanner

| ई - समिधा |

अन्य पुस्तको की pdf के लिए
टेलीग्राम पर ई-समिधा चैनल से जुड़े।

🙏

Scanned by CamScanner